P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-9*(Part-2) December- 2018
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

बडौदा (वडोदरा) राज्य कि सांगीतिक विरासत का संक्षिप्त अवलोकन

राजेश गोपालराव केलकर
अध्यक्ष,
कंठ्य संगीत विभाग,
फैकल्टी आफ परफ़ार्मिंग आर्ट्स,
महाराजा सयाजीराव यूनिवर्सिटी ऑफ बरोड़ा,
वडोदरा, गुजरात, भारत

सारांश

समाज जीवन में आवश्यक अन्यान्य पहलुओं की तरफ राज्यकर्ता अपनी क्षमता के अनुसार ध्यान देकर समाज के उत्थान के लिए प्रयत्नशील रहते है। इतिहास में कलाओं के माध्यम से राज्य की धरोहर, संस्कृति, परंपरा को नए आयाम देनेवाले राज्यकर्ताओं के कई उत्तम उदाहरण मिलते है। बडौदा राज्य के महाराजा सयाजीराव गायकवाड तृतीय इसका सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है। परन्तु उनके राज्यारोहण के पहले भी राज्यकर्ताओं ने विभिन्न कलाक्षेत्र में और विशेषतः संगीत कला में विशेष योगदान दिया। जिसके कारण सयाजीराव तृतीय को इन कलाओं को नयी ऊँचाइयों तक ले जाने में कुछ सरलता प्राप्त हुई। यह लेखन इसी सत्य को उजागर करता है।

मुख्य शब्द : कला संगीत, ख्याल, बोली, भाषा, बंदिश।

प्रस्तावना

कवि नाकर एवं कवि प्रेमानंद जैसे मूर्धन्य साहित्यकारों ने जिस भूमि को 'वीरक्षेत्र वडोदरा' कहा, वह दरअसल आगे चलकर 'संस्कारी नगरी' या 'कलानागरी' के नाम से प्रसिद्द हुई। अन्कोटक, चंपानगरी, वीरावती, वडपत्रक या वडोदर नाम से भी इतिहास में उल्लेख मिलता है। 'वटोदर' शब्द जो संस्कृत शब्द 'वटोदर' से आया। 'वटोदर' का शब्दशः अर्थ 'वटवृक्ष' का पेट है। सचमुच वडोदरा के आस पास के क्षेत्र में आज भी हज़ारो विशाल वटवृक्ष देखने को मिलते है। वैसे इतिहास में सर्वप्रथम सन ८१२ के आस पास व्यापारिओं के वडोदरा में स्थायी होने का उल्लेख मिलता है। तत्पश्चात गुप्त तथा चालुक्य शासन आया। तदनंतर देहली सल्तनत और मुग़लों के शासन में यह विस्तार रहा। बाद में पेशवाओं के प्रतिनिधि रहे। गायकवाड़ों का शासन १७३४ से ले कर १९४८ (स्वतंत्रता के बाद देश में रियासतों के विलीनीकरण तक) तक राज्यकर्ता रहे। इसी काल में जो सांस्कृतिक और विशेषतः सांगीतिक क्षेत्र में विविध आयामों की विकास यात्रा रही उसके बारे में यहाँ लेखन किया है।

गायकवाड शासन एवं वडोदरा

पिलाजीराव गायकवाड नामक मराठा सेनापति ने मुग़लों से बड़ौदा को सन १७२१ में मुक्त किया। तत्पश्चात उनके पुत्र दामाजीराव गायकवाड पेशवाओं के प्रतिनिधि के रूप में गुजरात प्रांत के मराठा मुखिया के रूप में स्थापित हुए और पूरे गुजरात से मुग़लों को हटाया। तब से ले कर सन १९४७ तक अनेक उतार चढ़ाव होते हुए भी गायकवाड शासन कायम रहा। गायकवाड सत्ता होने के बाद महाराष्ट्र और दक्षिण प्रान्त से प्रभावित ऐसी काफी कलाएं और उसके कलाकार बडौदा राज्य में आये, उन्हें प्रोत्साहन मिला। यह कलाएं काफी फली फूली। इन कलाओं में गीत, संगीत, नाट्य, नृत्य कला प्रमुख थी। गायकवाड राज्य के शासनकाल में नेतृत्व हमेशा कलारसिक रहा इसके कारण कलाओं को राज्याश्रय मिला और देश भर में बडौदा राज्य, कला और संस्कृति का प्रमुख केंद्र माना जाने लगा। स्वतन्त्रता के पश्चात आज भी यह सिलसिला चला आ रहा है।

संगीत एवं नृत्य का प्रारम्भिक उल्लेख

गुजरात प्रांत में गरबा उसकी विशेष पहचान है। वडोदरा का वर्णन करने वाली सर्वप्रथम गरबा नृत्य रचना सन १८४९ में लिखी गयी मिलती है। इसमें चार दिशाओं में बांधे गए चार आकर्षक बड़े दरवाजों में बसे वडोदरा शहर, उसके मध्य में मांडवी चौक, अलग अलग तालाब इत्यादि का उल्लेख इस गरबे में मिलता है। 'चार दिशामा चार चौटा, वचमां मांडवी चौक' इन प्रारम्भिक पंक्तियों वाले इस गरबे के रचनाकार थे भगवद्दास। इस प्रकार १९ वीं शताब्दी में वडोदरा में रहे संगीत के संकेत इस गरबे से मिलते है। गरबे के लोकाभिमुखी होने की

परंपरा एवं इतिहास सर्वविदित है। गरबा नृत्य और संगीत आज सारे विश्व में फ़ैल चुका है पर आज भी वडोदरा के गरबा की रौनक कुछ और ही है। इसी समय (१६ वी शताब्दी के पूर्वार्ध में) इच्छा गौरी नामक गरबा गायिका अपनी ऊँची धारदार आवाज में विशेष अंदाज और 'लहक' के साथ गाने के लिए प्रसिद्ध होने का उल्लेख मिलता है। महाराष्ट्र से आया पोवाडा, लावणी भी बडौदा में मराठी भाषी जनता और राज्यकर्ता में काफी प्रसिद्ध थी। महाराष्ट्र से ऐसे कलाकार नियमित रूप से बडौदा आते थे और उन्हें अच्छा पुरस्कार इत्यादि दिया जाता था।

शास्त्रीय संगीत का राज्य में प्रवेश एवं कलावंत कारखाना

भारतीय राग संगीत या शास्त्रीय संगीत के वडोदरा राज्य में प्रवेश की शुरुआत महाराजा सयाजीराव द्वितीय (जन्म १८०० एवं राज्यकाल १६१६–१८४७) के समय हुई। जब ध्रुपद, धमार, ख्याल और ठुमरी गायकी ने वडोदरा राज्य में प्रवेश करना शुरू किया। महाराजा खंडेराव गायकवाड (जन्म १८२८ एवं राज्यकाल १८५६–१८७०) के शासनकाल में 'कलावंत कारखाना' (Department of artists) स्थापित किया गया। यह अपने आप में एक अनूठा प्रयोग था। इसका विशेष उद्देश्य था कि कला एवं कलाकारों को प्रोत्साहित किया जाए और उन्हें लोकाभिमुख बनाया जाए। इस के अंतर्गत गायन, वादन, नर्तन, कुश्ती, नाट्य–माइम इत्यादि क्षेत्र के माहिर हो ऐसे लोगों को नौकरी में रखा गया। इस के अंतर्गत सभी कला, कलाकार एवं उसके सम्बंधित प्रशासन का कार्य होता था। यह प्रशासन का कार्य 'खानगी अधिकारी' देखते थे। कलावंत कारखाने को महाराजा सयाजीराव तृतीय ने कुशल शासनकर्ता के रूप में आये, अनेक सुधार लागू करवाये, उन्हें पूर्णतः व्यावसायिक रूप देने का सफल प्रयास भी किया। परन्तु उससे पहले भी 'कलावंत कारखाना' अन्यान्य कलाओं के संरक्षण हेतु एक सुयोग्य संस्था अवश्य थी। वह अपने आप में बेजोड़ थी। वैसे सन १८१७ तक कलाकारों की संख्या, उनके आने जाने का हिसाब या किसी भी प्रकार का लेखा जोखा नहीं रखा गया था। परन्तु सन १८१६ में एक पुरुष गायक को मासिक नियमित वेतन पर पहली बार रखा गया। बाद में अन्य ८ पुरुष कलाकारों को सवेतन रखा गया। सन १८२४ में एक दक्षिणी कलाकारों की मंडली को राज दरबार में स्थायी रूप में नियुक्त किया गया। बाद में सन १८२५ तो स्त्री गायिका, तीन पखावज वादक, तीन पुरुष गायक और चार वादकों को नियुक्त किया गया। अब कलावंत कारखाने का व्यवस्थित हिसाब सरकारी स्तर पर रखा जाने लगा। जिसकी कल्पना उस जमाने में करना असंभव था। १८४३ में २२ नियमित कलाकारों की नियुक्ति के अलावा कुछ माइम के कलाकार और भजन मंडली को भी नियमित रोस्टर पर रखा गया। इस भजन मंडली द्वारा 'ललितचा तमाशा' और अन्य अवसरों पर भक्ति संगीत गवाया जाता था। 'ललितचा तमाशा', शिवरात्री पर्व की अंतिम रात्री को प्रस्तुत होता था। कुछ ही दिनों में 'कलावंत कारखाना' में सरोद, सितार, सारंगी, प्याला (जल तरंग) एवं तशा वादक नियुक्त हुए। साथ साथ दो अन्य माइम के कलाकार और कर्नाटकी दशावतारी नाटककार भी जोड़े गए। स्वयं महाराजा सयाजीराव द्वितीय संगीत–नृत्यादी कलाओं से प्रेम रखते थे। देविदास बैरागी नामक कुशल संगीतकार को आप ने मथुरा से आमंत्रित कर बडौदा राज्य में नौकरी दी। आप गायन एवं सितार वादन में दक्ष थे। महाराजा ने अपनी पत्नी कोंडाबाई को संगीत शिक्षा देने के लिए उन्हें नियुक्त किया था। देविदास बैरागी स्वयं बड़े अध्यात्मिक और कृष्ण भक्त थे। कहते है उन्हें सन १८३५ में राधा वल्लभ मंदिर इनाम के तौर पर दिया जो की मांडवी क्षेत्र में पुराने सरकार वाड़े के पास स्थित था। देविदास की सन १८४६ में मृत्यु हुई। उसके बाद आप के दो शिष्य प्रियादास और राखिदास को मंदिर सौंपा गया। सयाजीराव द्वितीय ने नृत्यकला को भी प्रोत्साहित किया। आप के दरबार में जबेनबाई नामक प्रसिद्द 'नटवरी' नृत्य प्रकार की नृत्यांगना थी। आज का 'कत्थक' नृत्य उसी का विकसित स्वरुप है। महाराजा सयाजीराव द्वितीय के समय १० कलाकारों को नियुक्त किया गया। विविध राजकीय, धार्मिक, सांस्कृतिक आयोजनों में कला प्रस्तुती और मनोरंजन करना उनका उद्देश्य था।

खंडेराव गायकवाड (१८५७–१८७०) के समय कला और कलाकारों के पीछे किये जाने वाले खर्च में कमी आयी। कलावंत कारंखाने से अनेकों कलाकारों को छुट्टी दी गयी। परन्तु यह समय बहुत लंबा नहीं चला। १८६२ से कला और कलाकारों के फिर से अच्छे दिन आये। कलाकारों की संख्या में वृद्धि हुई। दक्षिणी मंडलियाँ और माइम के कलाकारों को प्रतिमाह क्रमशः रुपये ६०० और ४०० तक मिलते थे। २३ पुरुष गवैय्यों की स्थायी रूप से नियुक्ति हुई। पुरुष, महिला गायकों एवं नर्तकों का वेतन रुपये २०० दिया जाने लगा। नर्तकों में विशेषतः तंजावुर से कलाकार (सदिल = आज का भारत नाट्यम) थे। और गायकों में खयालिये थे। इस प्रकार कह सकते हैं कि दक्षिण भारत छोड़कर शायद बडौदा राज्य में पहली बार भरतनाट्यम का आगमन हुआ। उसी प्रकार उत्तर भारत छोड़कर नटवरी नृत्य तथा ख्याल गायन–वादन पश्चिम भारत में बडौदा राज्य में पहली बार आया।

विख्यात पखावज वादक नासर खां (१८२०–१६०३) बडौदा राज्य के एक अनमोल रत्न थे। अपने पिता ताज खां और काशी के प्रसिद्द पखावजी लाला भवानीसिंह के पास आपने पखावज की तालीम प्राप्त की थी। आप निपुण सितार वादक भी थे। अवध के बादशाह नवाब वाजिदअली शाह के दरबार में प्रतिष्ठित संगीतकार के रूप में नौकरी में थे। बाद में १८५६ में आप महाराजा खंडेराव गायकवाड के निमंत्रण पर बडौदा दरबार में आये। आप की तब प्रतिमाह सौ रुपये तनख्वाह थी। अनेकों को सिखाया जिसमें आप के अपने पुत्र निसार हुसेन, अपने दोहित्र नजीर खां, बालासाहब वालिम्बे, जोशी और हिम्मतराम बक्षी नामक शिष्य प्रमुख थे। नासर खां के पखावज बाज और उसके साहित्य पर संगृहीत 'मरहूम नासर खां का पखावज बाज' नामक एक मराठी पुस्तक का लेखन श्री नरहर शम्भू भावे ने (समाज सुधारक भारतरत्न विनोबा भावे के पिता) किया।

मल्हारराव गायकवाड (१८७०–१८७५) ने कलावंत कारखाने की गतिविधियों को अधिक प्रोत्साहित किया। कलावंत कारखाने का विस्तार भी किया और उसकी

प्रवृत्तियों एवं संरक्षण–सार सम्हाल के लिए अधिक बजट आबंटित किया। अपने शासनकाल में आप ने शास्त्रीय संगीत तथा नृत्य के साथ साथ लोककलाओं को भी प्रोत्साहित किया। गुजरात और महाराष्ट्र के कलाकारों को सहारा, आश्रय दिया। शारदीय नवरात्रि के दिनों में शहर के मध्य में नज़रबाग़ पेलेस के प्रांगण में बड़े उत्साह और उमंग के साथ संगीत के साथ गरबा का आयोजन किया जाता था। इसी स्थान पर नागर ब्राह्मणी गायिका इच्छागौरी द्वारा गाये गए गरबों के लिए बड़ी संख्या में जनता इकट्ठी होती थी। उनकी प्रसिद्धि सारे गुजरात में फैली। इसका उल्लेख हम पहले कर चुके है। उनकी दो बेटियाँ मानक और मणि ने भी अपनी माता की परम्परा आगे चलाई। मल्हारराव के कार्यकाल के दौरान ही दो महान कलाकार उस्ताद फैझ मोहम्मद खां और उस्ताद घसीट खान को राज्याश्रय मिला। फैझ मोहम्मद खां खुसरवी ख्याल गायकी के एकमात्र गवैये थे और साथ साथ ग्वालियर घराने के अत्यंत प्रतिष्ठित गवैये थे। घसीट खां भी न केवल अच्छे गायक अपितु उत्तम सितार वादक भी थे।

इसी समय का एक और महत्वपूर्ण नाम आता है मौलाबख्श घिस्से खां। आप भिवानी–हरियाणा के मूल निवासी थी। आप मूलतः कुश्तीबाज थे बाद में संगीतकार, कुशल प्रशासक, संगीतगुरु के रूप में विख्यात हुए। प्रारम्भ में आप मैसूर दरबार में संगीतकार के रूप में थे। आप ने बडौदा के तीन महाराजाओं के (खंडेराव, मल्हारराव और सयाजीराव तृतीय) अधीन कार्य किया। भारतीय संगीत की स्वरलिपि आप ने बनायी और उसे विख्यात संगीतकार ज्योतिन्द्रमोहन टागोर को दिखाकर उनसे आशीर्वाद प्राप्त किये। बाद में सन १८७० में संगीत के प्रचार हेतु 'गायनाब्धिसेतु' नामक मासिकपत्रिका भी शुरू की परन्तु पैसे के अभाव में उसे आप ने शीघ्र ही बंद किया। आप की दीर्घदृष्टि समर्पण देखकर महाराजा सयाजीराव तृतीय ने भी फिर से आमंत्रित किया। आप और सयाजीराव तृतीय के सम्पूर्ण सहयोग के कारण संगीत शिक्षा क्षेत्र में अनेकानेक नए आयाम निर्माण हुए और अनेक गौरवान्वित पन्ने लिखे गए। जिसके ऊपर अलग लेखन हो सकता है। दोनों ने संगीत के उज्जवल भविष्य के लिए एक स्वप्न देखा जो अपने आप में उस समय के सन्दर्भ में असाधारण था।

महाराजा सयाजीराव तृतीय आने के बाद बडौदा राज्य की उन्नति की गति तीव्र अवश्य हुई। परन्तु आप के सिंहासन पर आसीन होने से पहले ही बडौदा ने प्रगति की राह में गति प्राप्त कर ली थी। मानों आदर्श रियासत बनने की राह पर बडौदा राज्य तीव्र गति से चल पडा था। ब्रिटिश औपनिवेशिकों की तरह ही रॉयल (शाही) राज्य के प्रशासन के सम्बंधित सभी पहलुओं, नौकरशाही इत्यादि को व्यवस्थापन की द्रष्टि से सुगठित, सुसंस्थापित किया गया था। बडौदा आधुनिक राज्य बनने की शुरुआत हो चुकी थी।

इस लेखन का उद्देश्य महाराजा सयाजीराव तृतीय के राज्याभिषेक से पहले होनेवाली सांस्कृतिक गतिविधियों–प्रवृत्तियों की जानकारी को ही सम्मिलित करना था। सयाजीराव तृतीय के कार्य के लिए अधिक बड़ा फलक आवश्यक है। यह निश्चित है कि कला प्रवृत्तियों को फूलने फलने के लिए योग्य आवश्यक सिंचन हो चुका था.

निष्कर्ष

बडौदा राज्य के 'संस्कारीनगरी' की उपाधि प्राप्त करने में महाराजा सयाजीराव गायकवाड तृतीय का योगदान सब से अधिक महत्वपूर्ण है। परन्तु आप के कार्यकाल शुरू होने से पहले आप की कलाजगत के लिए योगदान के लिए पार्श्वभूमी तो आप के आने से पहले ही राज्यकर्ताओं ने तैयार की थी। वडोदरा राज्य हमेशा प्रगतिशील रहा। अनेक कलाएं और प्रतिष्ठित कलाकारों को राज्याश्रय देने के परंपरा १६ वीं शताब्दी के पहले से ही रही है। महिला कलाकारों को सम्मान मिलना विशेष उल्लेखनीय है। उसका विवरण इस लेखन में मिलता है। सयाजीराव तृतीय के पहले कलाबाजी, संगीत, नाटक, नृत्य आदि कलाओं के साधक और कलाकार बडौदा राज्य में आ कर सुस्थिति में स्थापित हो चुके थे। कत्थक, भरत नाट्यम जैसे नृत्यप्रकार, ध्रुपद–ख्याल गायकी अपना जन्म स्थान छोड़ कर वडोदरा राज्य में भी स्थापित हो चुके थे। समस्त राज्य अनेक कला सम्बन्धी प्रवृत्तियों से उद्यमी और सक्रिय हो चुका था। शायद इसी की प्रेरणा से सयाजीराव तृतीय ने इन्हें और ऊँचाइयों पर ले जाने का निश्चय किया। उस दिशा में सुआयोजित रुपरेखा निश्चित की और उसके अनुसार समय समय पर इन कलाओं को प्रोत्साहित कर बडौदा नगरी और राज्य को पूरे भारत के सांस्कृतिक पटल पर महत्वपूर्ण केन्द्रीय स्थान दिया.

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

शाह डॉ मुलजी भाई पी. शाह, 'भारतना संगीतरत्नो भाग १', प्रकाशक राजेन्द्र एम। शाह, अहमदाबाद, १९६७.

Bakhale, J. C., *'Two men and Music', Oxford University Press, New York 2005.*

Biography of Pir O Murshid Inayat Khan, East West Publications, London, 1979.

Wade, B. C. 'Khayal: Creativity within north India's classical Music Tradition', Cambridge University Press, Cambridge, 1984.

Wade, B. C. 'Music in India: The classical Traditions', Cambridge University Press, 1994.

Buksh, Maula. 'Sangeetanubhav' (in Marathi/Gujarati), Baroda. 1888.

Gangopadhyay, T. 'Baroda: A tale of two cities', Sarjan Art Gallery, Vadodara. 2008.